भारतीय रेल की धरोहरों का संरक्षण

भारतीय रेलों के पास 150 वर्षों से भी अधिक वर्षों का गौरवशाली इतिहास और समृद्ध विरासत है। भारत में रेलों के प्रादुर्भाव ने देश के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को सुदृढ़ किया है। भारतीय रेलें इस राष्ट्र की जीवन रेखा रही हैं और रहेंगी।

भारतीय रेलों के प्रगतिशील और समृद्ध इतिहास को दर्शाने के लिए 1971 में नई दिल्ली में राष्ट्रीय रेल संग्रहालय की स्थापना की गई। इस संग्रहालय के खुले क्षेत्र में रेलों का आरंभ से अब तक का भारतीय रेलों के धरोहर का इतिहास, विरासत, रोमांच और अतीत की स्मृतियों का व्यापक संग्रह दर्शाया गया है जिसमें 1862 तक में बने पुराने भाप के इंजन से लेकर डीजल, बिजली के इंजन और सवारी डिब्बे, सैलून, माल डिब्बे और क्रेनें शामिल हैं। इन ऐतिहासिक धरोहरों में 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' धारक 1855 में निर्मित भाप का इंजन 'फेयरी क्वीन' था जो सबसे पुराना भाप का इंजन है जो अभी भी चल रहा है, और इसका इस्तेमाल दिल्ली से चलने वाली पर्यटक गाड़ी में किया जाता है। यहां प्रदर्शित अन्य प्रमुख आकर्षणों में 1862 का भाप इंजन 'रामागोट्टी', प्राइसलेस सैलून ऑफ रॉयल्टी, 1907 की 'पटियाला स्टेट मोनोरेल ट्रेन', 'फायरलेस लोकोमोटिव' और 1914 का 'मोरिस फायर इंजन' शामिल हैं। आंतरिक दीर्घा में चालू और स्थैतिक मॉडल, लघु गाड़ी प्रणालियां और ऐतिहासिक महत्व के रेल उपकरणों का विशाल संग्रह है। 'रेल पुरातत्व संग्रहालय' भारत में रेलवे के प्रादुर्भाव और विस्तार की कहानी बयान करता है। इस संग्रहालय में वीडियो फिल्में, जॉय ट्रेन की सवारी, कैफेटेरिया और विकलांगों के लिए विशेष सुविधाएं भी हैं। संग्रहालय परिसर में 200 सीटों की क्षमता वाला एक अत्याधुनिक सभागार है जिसमें सम्मेलन, फिल्म प्रस्तुतियां और स्टेज शो आयोजित करने की सुविधाएं मौजूद हैं। यह संग्रहालय दिल्ली के पर्यटन स्थलों में आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। संग्रहालय के बारे में जानकारी इसकी वेबसाइट www.nationalrailmuseum.org. और www.nrm.indianrailways.gov.in पर भी प्राप्त की जा सकती है।

इसकी सफलता से प्रोत्साहित होकर कोलकाता, चेन्नै, नागपुर और मैसूर में भी क्षेत्रीय रेल संग्रहालय स्थापित किए गए हैं। पश्चिमी क्षेत्र के लिए लोनावाला में भी एक रेल संग्रहालय स्थापित किया जा रहा है। इसके अलावा, कालका शिमला रेलवे पर शिमला में और दार्जलिंग हिमालयन रेलवे पर 'घूम' में छोटे संग्रहालय स्थापित किए जा रहे हैं।

भारतीय रेल पर चार विश्व धरोहर स्थल हैं। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं।

i) दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे (डीएचआर)-यूनेस्को द्वारा 1999 में घोषित:

दार्जिलिंग-हिमालयन रेलवे में दो फीट (0.610 मी.) आमान का 88.48 किमी का रेलपथ शामिल है जो 2,258 मी. की ऊंचाई पर घूम के जरिए गुजरते हुए न्यू जलपाईगुड़ी को दार्जिलिंग से जोड़ता है। इस नवीन डिजाइन में 1:31 के रुलिंग मोड़ के साथ 6 जिग-जैग रिवर्स और तीन लूप शामिल हैं।

ii) नीलगिरी-माउंटेन रेलवे (एनएमआर)-यूनेस्को द्वारा 2005 में घोषित:

45.88 किमी लंबी मीटर आमान की इकहरी रेलवे लाइन, नीलगिरी माउंटेन रेलवे के निर्माण के लिए पहले 1854 में प्रस्ताव किया गया था लेकिन पर्वतीय स्थलों में कठिन भू-भाग के कारण यह कार्य 1891 में शुरू किया जा सका और 1908 में पूरा किया गया। ये रेलवे जो 326 मीटर से 2,203 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, में तीव्र ढाल से गुजरने के लिए नवीनतम प्रोद्योगिकी और अनूठे किस्म की रेक और गरारी द्वारा कर्षण व्यवस्था का इस्तेमाल किया गया।

iii) कालका-शिमला रेलवे (केएसआर)-यूनेस्को द्वारा 2008 में घोषित:

शिमला के ऊंचाई वाले शहरों पर रेल-सेवा पहुंचाने के लिए 19वीं सदी के मध्य में निर्मित 96.6 किमी लंबे इकहरी लाइन वाले परिचालित रेल लिंक, कालका-शिमला रेलवे पर्वतीय क्षेत्र के जन-जीवन को रेलवे द्वारा जोड़ने की तकनीकी और महत्वपूर्ण प्रयासों का प्रतीक है। कालका शिमला रेलवे के विश्व के सर्वोच्च बहु-मेहराव गैलरी पुल और विश्व की सर्वाधिक लंबी सुरंग (निर्माण के समय) इस सपने को साकार करने के लिए इस्तेमाल किए गए उत्कृष्ट इंजीनियरी कौशल का प्रमाण था।

iv) छत्रपति-शिवाजी टर्मिनस, मुंबई (सीएसटीएम)-यूनेस्को द्वारा 2004 में घोषित:

छत्रपति-शिवाजी टर्मिनस, मुंबई सामान्यत: बम्बई बीटी के नाम से जाना जाता है। यह इमारत ब्रिटिश कॉमनवेल्थ में 19वीं सदी के रेलवे आर्किटेक्चर का उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें विक्टोरिया-गोथिक रिवायल और परम्परागत भारतीय विशेषताओं के साथ-साथ इसके उत्कृष्ट संरचनात्मक और तकनीकी विशेषताएं शामिल हैं।

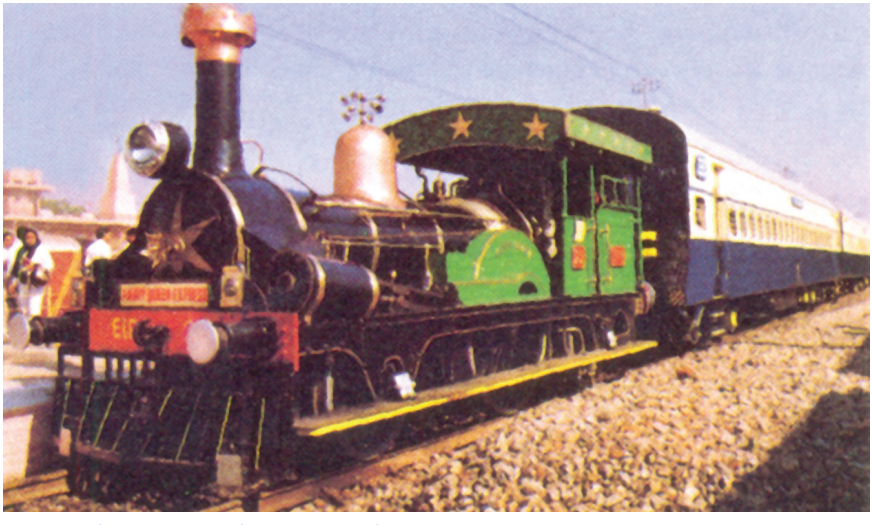

विश्व का सबसे पुराना भाप इंजन, फ्येरी क्वीन परिचालन में